शोध की संख्या पर प्रोफेसरों को नहीं मिल सकेगा प्रमोशन

इंदौर। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी समेत देश की सभी यूनिवर्सिटी में अब प्रोफेसरों को प्रमोशन शोध की संख्या के आधार पर नहीं मिलेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने सभी यूनिवर्सिटी को निर्देश दिया है कि प्रोफेसरों के प्रमोशन जर्नलों में प्रकाशित शोध की संख्या पर नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता के आधार पर दी जाए। यही नियम यूनिवर्सिटी में शोधरत स्टूडेंट्स के लिए भी इस्तेमाल करने को कहा गया है। आमतौर पर पत्र-पत्रिकाओं व जर्नलों में प्रोफेसर और शोधरत स्टूडेंट प्रायोजित शोध प्रकाशित करवा लेते हैं। इससे गुणवत्ता पर असर पड़ता है इसलिए यूजीसी ने नई गाइडलाइन बनाई है। यूजीसी ने स्पष्ट कर दिया है कि शोधरत स्टूडेंट या प्रोफेसरों को अवॉर्ड क्रेडिट प्वाइंट, प्रमोशन और रिसर्च डिग्री सिर्फ प्रकाशित काम की गुणवत्ता के आधार पर दिया जाए, न कि बहुत सारे प्रकाशित काम पर।

अपना निर्णय प्रकाशित काम की गुणवत्ता के आधार पर दें

एक अधिकारी के मुताबिक यह दिशा-निर्देश शोध और ज्ञान के प्रसार के हित में भारतीय अकादमिक जगत की विश्वसनीयता के लिए बनाया गया है। यूजीसी ने इस संबंध में सभी यूनिवर्सिटी को लिखे पत्र में कहा है कि अकादमिक प्रदर्शन, मूल्यांकन एवं आकलन में शामिल सभी कुलपतियों, स्क्रीनिंग कमिटियों, रिसर्च सुपरवाइजरों को सलाह दी जाती है कि वे चयन, प्रमोशन, क्रेडिट और डिग्री देने के मामले में अपना निर्णय प्रकाशित काम की गुणवत्ता के आधार पर दें, ना कि उसकी संख्या पर।

केयर सूची में 800 जर्नलों को किया शामिल

इससे पहले यूजीसी ने ऐसे जर्नलों की सूची भी प्रकाशित की थी जिन्हें सही पाया गया था। यूजीसी केयर (कंसोर्टियम फॉर एकेडमिक रिसर्च एंड इथिक्स) रिफरेंस लिस्ट के तहत उन सभी जर्नलों की सूची है जिसमें शोध प्रकाशित करना मान्य है। इससे पहले बिना मान्यता वाले कई जर्नलों में अपना लेख प्रकाशित करवाकर शोधार्थी इसे एक संख्या के रुप में प्रस्तुत करते थे। जून 2019 में सूची का प्रकाशन हुआ है। यूजीसी ने इस सूची की एक बार फिर याद दिलवाते हुए कहा है कि कुलपति सूची में निर्धारित जर्नलों में प्रकाशित शोध को ही अपना आधार बनाएं। यूजीसी के केयर सूची में सिर्फ 800 जर्नलों को शामिल किया गया है। इससे पहले इस सूची में 5000 जर्नल शामिल थे।

डीएविवि के 6 स्टूडेंट को मिला 19.5 लाख रुपए का पैकेज

इंदौर (आरएनएन)। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के अकादमिक सत्र 2019-20 का दूसरा चरण पूरा हुआ। सेंट्रलाइज्ड प्लेसमेंट कमेटी ने इसके परिणाम भी जारी कर दिए हैं। रिजल्ट के मुताबिक दूसरे फेज में कुल 13 कंपनियां आई जिसमें 271 से अधिक स्टूडेंट्स को जॉब ऑफर मिले। इन प्रक्रिया में मुख्य रुप से आईआईपीएस, आईईटी और एससीएसएंडआईटी के स्टूडेंट्स को ऑफर मिले। प्रक्रिया के दूसरे चरण के अंतर्गत मल्टीनेशनल कंपनी वीएमवेर ने स्टूडेंट्स को 19.5 लाख का सबसे बड़ा पैकेज दिया जिसमें 6 स्टूडेंट चयनित हुए।

औसतन पैकेज 5.8 लाख रहा

इससे पहले सेंट्रलाइज्ड प्लेसमेंट कमेटी ने सितंबर में पहला चरण पूरा किया था। इसके अंतर्गत 474 स्टूडेंट्स को ऑफर मिले थे। तीन महीने तक चली प्लेसमेंट प्रक्रिया में कुल 34 कंपनियों में 745 से अधिक ऑफर मिल चुके हैं। दूसरे चरण की खास बात यह रही कि इसमें दिया जाने वाला औसतन पैकेज 5.8 लाख और 19.5 का सबसे बड़ा ऑफर था। दूसरे चरण की समाप्ति के बाद कई स्टूडेंट्सक` पास तीन से भी ज्यादा ऑफर है। प्लेसमेंट ड्राइव के दूसरे चरण की समाप्ति की घोषणा आईआईपीएस में की गई। इस कार्यक्रम के दौरान यूनिवर्सिटी की कुलपति [illegible] आईआईपीएस डायरेक्टर डॉ. ए.के. सप्रे, डॉ. सुरेश पाटीदार, डॉ. गोविंद माहेश्वरी, डॉ. नितिन नागर, वाय.एस. चावल, डॉ. रमेश ठाकुर, डॉ. मंजू सचदेव, कम्प्यूटर और मैनेजमेंट के सभी प्रोफेसर्स भी मौजूद थे। आईएमएस के प्लेसमेंट अधिकारी अवनीश व्यास और निशिकांत वायकर भी मौजूद थे।

अन्य परिणाम आना बाकि

प्लेसमेंट कमेटी की माने तो दूसरे चरण की समाप्ति के बाद लगभग सभी स्टूडेंट्स का प्लेसमेंट हो गया है। आंकड़ों के अनुसार लगभग 88 प्रतिशत स्टूडेंट्स के पास ऑफर है। इसके अलावा आईआईपीएस, आईएमएस व अन्य मैनजमेंट कोर्स के प्लेसमेंट प्रक्रिया के परिणाम आना अभी बाकि है। प्लेसमेंट की प्रक्रिया अभी जारी है और चयनित हुए स्टूडेंट्स की संख्या बढ़ने की उम्मीद है।

डॉ. माहेश्वरी ने चयनित हुए स्टूडेंट्स को महत्वपूर्ण जानकारी दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कुलपति डॉ. जैन ने सभी को संबोधित करते हुए चयनित हुए स्टूडेंट्स का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने एक से ज्यादा कंपनियों में चयनित हुए स्टूडेंट्स को खास हिदायत देते हुए सही निर्णय लेने और भविष्य को उज्जवल करने की [illegible]